भारत में क्रान्तिकारी राश्ट्रवादी आन्दोलन

Sona devi
Assistant Professor, Deptt of History, G.C.Sidharawali, Gurugram.

Received: April 02, 2019 Accepted: May 07, 2019

भूमिकाः–

भारत में अंग्रेजी साम्राज्य के विरूद्ध संग्राम लगभग इस दे"ा में ब्रिटि"ा साम्राज्य के आरंभ से ही शुरू होता है। भारतीयों ने विदे"ाी साम्राज्य के विरूद्ध संघर्ष करते हुए विभिन्न संसाधनों एंव तौर – तरीकों को अपनाया।1857ई0 क्रान्ति तक भारतीयों ने अपने राजाओं, धार्मिक, नेताओं तथा निरस्त जमीदारों के नेतृत्व में स"ास्त्र संघर्ष किए। परिणामस्वरूप 1857 ई0 की क्रान्ति के रूप में विरोध अपनी चरम सीमा पर पहुँच गए। इतना ही नहीं 1857ई0 की क्रान्ति से पूर्व ब्रिटि"ा साम्राज्य की ताना"ााही एंव अत्याचार के विरूद्ध अनेक जनवादी संघर्ष भी हुए, उदाहरण स्वरूप संथाल विद्रोह (1855ई0), नील विद्रोह (1860), किसान जागरण (दक्षिणी भारत 1870), कूका आंदोलन(पंजाब 1855ई0), तथा उतर पूर्वी–भारत के मुस्लिम समुदाय के वहाबी आंदोलन। इसके अतिरिक्त 1857 ई0 की क्रान्ति के प"चात् 19वीं सदी के अन्तिम द"ाकों में सामाजिक–धार्मिक एंव आर्थिक परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए जिनमें भारतीय जनमानस में एक नई राष्ट्रीय एंव राजनीतिक चेतना की आधार"ाला रखी। साथ ही कर्जन के वायसराय काल (1899–1905ई0) में अनेक अविवेकपूर्ण कार्य सम्पन्न किए गए, जिसके तहत भारत के जुझारू आंदोलन का सक्रियता में इजाफा हुआ। 1905ई0 के बंगाल विभाजन राजनीतिक दृष्टि से भारतीय जनता का विभाजन एंव भारतीय वातावरण में विकसित हो रही राष्ट्रवाद की भावना को समाप्त करना था। इस प्रकार भारतीय संदर्भ में व्यापक जन आंदोलन की रूप रेखा तैयार कर ब्रिटि"ा साम्राज्य ने स्वयं के विरूद्ध घोर विरोध को उत्पन्न किया था। 19वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में अकाल एंव प्लेग से अत्यधिक संख्या ने भारतीय मृत्यु के ग्रास बन गए जिसके फलस्वरूप भारतीय वातावरण में निरा"ाा तथा दुःख का समावे"ा हो गया। किन्तु अन्तराष्ट्रीय राजनीति में प्रबल परिवर्तन जिनका सीधा प्रभाव भारत के "ाक्षित युवा वर्ग में ब्रिटि"ा साम्राज्य के विरूद्ध आक्रो"ा एंव असन्तोष ही क्रान्तिकारी राष्ट्रीय आंदोलन को उत्पन्न करता है 20वीं शताब्दी का आरंभ भारत में राष्ट्रवादी क्रान्तिकारी आन्दोलन की लहर लेकर आई।

क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी आन्दोलन के क्रान्तिकारी कांग्रेसी नेताओं की उदारवादी नीतियों मे वि"वास नहीं करते थे। इन क्रान्तिकारियों का वि"वास था कि राष्ट्रीय जीवन के हित में जो भी उपयोगी तत्व है, जैसे कि धार्मिक एंव राजनीतिक स्वतन्त्रताएँ, नैतिक मूल्य तथा भारतीय संस्कृति, उन सभी को विदे"ाी शासन समाप्त कर देगा। यद्यपि समस्त भारत के विभिन्न क्षेत्रों में क्रांतिकारियों का राजनैतिक द"ान का नि"चत रूप से वर्णन करना संभव नहीं परन्तु उन सबका एक मात्र उद्दे"य थाः– मातृभूमि को विदे"ाी शासन से मुक्त कराना।

साधनों के विषय में उनका वि"वास था कि पा"चात्य साम्राज्य वाद को प"चमी हिंसक साधनों से ही समाप्त किया जा सकता, इसलिए क्रान्तिकारियों ने बम, पिस्तौल का प्रयोग किया। क्रान्तिकारी संगठनों ने तरूण वर्ग को दीक्षा दी और उनमें दे"ा पर आत्म–बलिदान होने की भावना भरी। क्रान्तिकारियों ने हथियार बाँटे, हथियारों के प्रयोग का प्र"ाक्षण दिया और बमों का निर्माण करना, डाका डालना, बैंक, डाकघर अथवा रेलगाड़ियाँ लूटना सभी कुछ वैध था। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में क्रान्तिकारी गुट सक्रिय थे जिनका वर्णन अग्रलिखित हैः–

महाराश्ट्र में क्रान्तिकारी आन्दोलन :–

1918ई0 को विद्रोह समिति की रिपोर्ट में कहा गया था कि भारतीय वातावरण में क्रान्तिकारी गतिविधियों का प्रथम आभास महाराष्ट्र के पूना जिले चितपावन ब्राह्मणों में दृष्टिगोचर होता है। ये चितपावन ब्राह्मण महाराष्ट्र के महान शासको "ावाजी तथा छत्रपति शाहू के पे"ावाओं के वं"ाज थे। परिणामस्वरूप इन ब्राह्मणों में स्वराज्य प्राप्ति तथा स्वराज के प्रति प्रेम की भावना बनी रही परिणामस्वरूप इनके हृदय में ब्रिटि"ा साम्राज्य के विरूद्ध असन्तोष रहा। श्री बाल गंगाधर तिलक ने जो स्वयं महाराष्ट्र के चितपावन ब्राह्मण थे, ने 1893ई0 में गणे"ा त्यौहार तथा 1895ई0 में "ावाजी त्यौहार मनाया।

इससे महाराष्ट्र की जनता में दे"ाप्रेम एंव आत्म गौरव की भावना का प्रसार हुआ। भारतीय वातावरण में क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी आंदोलन की प्रथम घटना 22 जून 1897 ई0 को पूना में घटित हुई। जिसके अन्तगर्त दो चितपावन ब्राह्मण दामोदर तथा बालकृष्ण ने अकाल समिति के अध्यक्ष श्री रैण्ड की हत्या कर दी। परिणामस्वरूप चापकर बन्ध अपराधी पाए गए तथा उन्हें फांसी दे दी गई। शासक वर्ग ने अंग्रेजों के विरूद्ध लेख लिखने के कारण तिलक जी को 18 माह का कड़ा कारावास दिया। 15 जून 1897ई0 को 'केसरी' में लिखे गए कथन में स्पष्ट हैः– श्री कृष्ण का भगवद् गीता में उपदे"ा है कि अपने गुरूओं और बन्धुओं की भी हत्या कर दो। यदि कोई व्यक्ति कर्मफल की इच्छा के बिना कर्म करता है तो उसे कोई दोष नहीं लगता। ई"वर ने विदे"ायों को भारत का साम्राज्य ताम्रपत्र पर लिखकर नहीं दिया है अपनी दृष्टि को कूप–मण्डूक की नाई सीमितमत करो। दण्ड–संहिता की परिधि से बाहर आओ तथा श्रीमद भगवद्गीता के उतम वातावरण में प्रवे"ा करो

तथा महान आत्माओं के कार्यो का ध्यान करो।

ब्रिटेन में क्रान्तिकारी गतिविधियाँ

भारत के प"चमी काठियावाड के निवासी श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने कैम्ब्रिज वि"वविद्यालय से ि"ाक्षा प्राप्त की तथा बैरिस्टर बने। भारत की कई रियासतों में कार्य करते हुए राजनीतिक रजीडेन्टों की भेदभाव पूर्ण नीति ने इन्हें झकझोरा परिणाम स्वरूपभारत की स्वतन्त्रता के लिए प्रयासरत हुए। 1905ई0 में इन्होनें लंदन में 'इंडिया–हाउस' की नींव रखी। इन्होनें राष्ट्रवादी तथा क्रान्तिकारी जनचेतना हेतु 'Indian Socialogist' नायक पत्रिका भी आरंभ की। इन्होनें विदे"ाों में आने वाले योग्यता प्राप्त भारतीयों के लिए एक–एक हजार रूपये की 6 फैलो"िप भी आरंभ की। परिणामस्वरूप लंदन में इंडिया–हाउस क्रान्तिकारी गतिविधियों का केन्द्र बन गया। वी0 डी0 सावरकर, लाला हरदयाल और गदन लाल ढ़ींगरा जैसे क्रान्तिकारी इसके सदस्य बन गए। वी0डी0 सावरकर पूना के फर्ग्यूसन कॉलेज के तरूण स्नातक थे।

1904 ई0 में सावर कर जी ने नासिक में 'मित्र मेला' नामक संस्था स्थापित की जो कालांतर मे मैजिनी की गुप्त संस्था 'यंग–इटली की तर्ज पर अभिनव–भारत' में परिवर्तित हो गई।

मई 1907ई0 मे इण्डिया–हाउस ने 1857ई0 की क्रान्ति की स्वर्ण जयंती मनाने का नि"चय किया। वी0 डी.0 सावरकर ने इस क्रान्ति को ''भारतीय स्वतंत्रता संग्राम'' की संज्ञा दी।

वी0 डी0 सावरकर जी ने अपने विचार 'The Indian war of independence* में व्यक्त किए।

1909 ई0 में मदन लाल ढ़ीगरा ने कर्नल विलियम कर्जन वाइली की गोली मारकर हत्या कर दी। अंग्रेजी सरकार ने कड़ा रूख अपनाया। मदनलाल ढ़ींगरा पकड़ गए और उन्हें फाँसी दे दी गई। सावरकर को भी आजीवन दे"ा निष्का"ान का दण्ड दिया गया। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भी लंदन छोड़ दिया और पेरिस चले गये। इस प्रकार इंडिया हाउस की गतिविधियाँ बन्द कर दी गई।

बंगाल में क्रान्तिकारी आंदोलन :–

बंगाल में क्रान्तिकारी क्रिया–कलापों की आधारि"ाला भद्रलोक समाज द्वारा रखी गई। श्री0 पी0 मित्रा ने एक गुप्त क्रान्तिकारी सभा अनु"ाीलन–समिति की नींव रखी। बंगाल–विभाजन (1905ई0) के प"चात् स्वदे"ाी आंदोलन के अंतगर्त राजनैतिक जागृति आई परिणामस्वरूप इस आंदोलन का उद्दे"य बंगाल विभाजन रदद् करवाना ही नहीं अपितु स्व"ाासन प्राप्त करना निर्धारित किया गया। 1905ई0 में बरिन्द्र कुमार घोष ने 'भवानी मंदिर' नामक पुस्तिका द्वारा क्रान्तिकारी कार्यो को संगठित करने के लिए केन्द्र बनाने की विस्तृत जानकारी दी गई। इसके प"चात् ''वर्तमान रणनीति के नियम, ''युगान्तर'' एंव ''साधना'' नामक पत्रिकाओं में ब्रिटि"ा साम्राज्य विरोधी विचार प्रकाि"ात किए जाने लगे। 'मुक्ति कौन पाथे' नामक पत्रिका में भारतीय सैनिको द्वारा भारतीय क्रान्तिकारियों को हथियार देने का आग्रह किया गया। बंगाल के तरूण युवकों को शक्ति की घातक भवानी की पूजा करने का आह्वान किया गया। क्रान्तिकारी गतिविधियों के फलस्वरूप हिंसक घटनाएँ हुई जब क्रान्तिकारियों ने धन की व्यवस्था करने के लिए कुछ डकैतियों के 'ाडयंत्र रचे। 1907ई0 में पूर्व बंगाल तथा बंगाल के लेफ्टिनेंट गर्वनरों की हत्याओं के असफल प्रयास किए गए। 30 अप्रैल 1908 ई0 का आधुनिक बिहार के मुजफ्फर पुर जिले के न्यायद्यी"ा किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयास किया इन्होनें नवयुवकों को छोटे–छोटे अपराधों के लिए बड़ी–बड़ी सजाएँ दी थी। खुदीराम बोस और प्रफुल्लचाकी ने इस कार्य को सफल करने के उद्दे"य से गलती से कैनेडी की गाड़ी पर बम गिरा दिया। जिससे दो महिलाओं की मृत्यु हो गई। प्रफुल्ल चाकी तथा खुदी राम बोस पकड़े गए। चाकी ने आत्महत्या कर ली जबकि बोस को फांसी दे दी गई। सरकार ने अवैध हथियारों की तला"ा के सम्बन्ध मे मानकोटला उद्यान तथा कलकत्ता में तलाि"ायों ली तथा 34 व्यक्तियों को बन्दी बनाया गया, जिसमें 2 घोष बन्धु अरविन्द तथा बरिन्द्र सम्मिलित थे। इन पर अलीपुर 'ाड्यन्त्र काण्ड का मुकदम्मा बना। मुकदम्में के दौरान सरकारी गवाह नरेन्द्र गोंसाई की हत्या जेल मे कर दी गई फरवरी 1909 ई0 में कलकत्ता के सरकारी वकील की हत्या कर दी गई तथा 24 फरवरी 1910 ई0 को उपपुलिस अधक्षिक की कलकत्ता उच्च न्यायालय से बाहर आते समय हत्या कर दी गई। इस घटना से समस्त भारत में उत्तेजना फैल गई। तिलक ने इन बंगाल के तरूण क्रान्तिकारियों की प्र"ांसा करते हुए 22 जून 1908 ई0 के 'केसरी' में उन्होंने इस प्रकार टिप्पणी की ''1897 में हुई हत्याओं तथा बंगाल में बम–काण्डों में बहुत भेद है। .....चापेकर बन्धुओं का उद्दे"य उस उत्पीड़न का विरोध करना था जो प्लेग के दिनों में किया गया अर्थात एक कार्य वि"ोष का विरोध करना था, परन्तु बंगाली बग दल का उद्दे"य विस्तृत तथा बहुत अलग है, जो कि बंगाल–विभाजन के कारण हमारे सम्मुख आया है।

परिणामस्वरूप रौल्ट कमेटी की रिपोर्ट ने 1906ई0 से 1917 ई0 के मध्य बंगाल में 110 डाके तथा हत्या के 60 प्रयासों का उल्लेख किया है।

पंजाब में भी ि"ाक्षित वर्ग इन क्रान्तिकारी विचारों से प्रभावित हुआ। पजाब सरकार का सुझाव था कि चिनाव तथा दोआब नहरी बस्तियों में भू–राजस्व में वृद्धि की जानी चाहिए। केन्द्रीय सरकार ने इस विधेयक को पंजाब विधान परिषद् ने पारित कर दिया गया किन्तु जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले दो प्रमुख नेताओं, लाला लाजपत राय तथा सरदार अजोतसिंह को बन्दी बना लिया गया और 1818ई0 के रेग्यले"ान III के तहत दे"ा से निर्वासित कर दिया गया। अजीत सिंह 6 माह बाद छोड़ दिए गए तथा वह फ्रांस चले गए। लाल चंद फलक तथा भाई परमानंद को भी भिन्न–भिन्न अवधि के लिए जेल दण्ड दिया गया। दिसम्बर 1912 ई0 को लार्ड हार्डिंग की राजयात्रा के समय चाँदनी चौक में बम फेंका गया परिणाम स्वरूप बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदे"ा में मुजफ्फरपुर में हत्याकांड तथा बनारस में 'ाडयंत्र रचे गए।

गदर आन्दोलन :–

स्वदे"ाी आन्दोलन के निष्क्रिय होने से भारतीय राष्ट्रवाद के प्रहरी भी निष्क्रिय हो गए थे। 1914ई0 में अचानक छीड़े प्रथम वि"व युद्ध ने भारतीय राष्ट्रवाद के प्रहरियों को झकझोरा, उन्हें उद्वेलित किया। परिणामस्वरूप उतरी अमेरिका में क्रान्तिकारियों जिनमें लाल हरदयाल, रामचन्द्र तथा बरकतुल्ला थे, ने मिलकर सानफ्रांसिस्को में 'गदर–दल' का गठन किया। क्रान्तिकारियों ने व्यापक स्तर पर प्रचार कार्य आरंभ किया। खेतों और कारखानों में जाकर अप्रवासी भारतीयों से संपर्क करने लगे। 1 नवम्बर 1913ई0 को गदर पत्रिका का प्रथम अंक उर्दू भाषा में प्रका"ात हुआ।

इस अंक का आरंभ इस प्रकार किया हमारा नाम क्या है? गदर अथवा विद्रोह हमारा काम क्या है विद्रोह! ''यह विद्रोह कहाँ होगा''! भारत में अखबार का नाम जानकर ही लोग समझ सकते थे कि इसका मकसद क्या हैं। किसी को यदि कोई आ"ांका रही होगी, तो वह अखबार के नाम के साथ लिखी यह पंक्ति 'अंग्रेजी राज का दु"मन' पढ़ने से खत्म हो गई होगी। पंजाब में कामागाटामारू प्रकरण ने बिस्फोटक स्थिति उत्पन्न कर दी। बाबा गुरूदत्त सिंह ने एक जापानी जलपोत कामागाटामारू को भाड़े पर लेकर 35 पंजाबी सिक्खों तथा 21 मुस्लमानों को कनाडा के बैंकूवर नगर ले जाने का प्रयत्न किया। किन्तु इस जलपोत को कनाड़ा सरकार ने बन्दरगाह पर उतरने की अनुभूति पदान नहीं की। परिणामस्वरूप 24 सितंबर 1914 ई0 को पुनः कलकत्ता बन्दरगाह लौट आया। जलपोत के यात्रियों को वि"वास था कि ब्रिटी"ा सरकार के दबाव के कारण ही कनाडा सरकार ने लौटाया हैं। बाबा गुरूदत्त सिंह को गिरफ्तार करने का प्रयत्न किया गया परन्तु वह भाग गये। शेष यात्रियों का पंजाब लाया गया। कालान्तर में लाहौर 'ाड्यन्त्र मुकदम्मों में स्पष्ट हो गया कि पंजाब में रक्तपात होते–होते बचा। अंग्रेजी सरकार ने परिणामस्वरूप राजद्रोही सभाओं को रोकने का अधिनियम (1908ई0)

विस्फोटक पदार्थ अधिनियम (1908ई0)

समाचार पत्र अधिनियम (1910ई0)

तथा सबसे घिनौना भारतीय सुरक्षा नियम (1915ई0) बना दिए। इस प्रकार प्रथम वि"व युद्ध के अंत पर इन क्रान्तिकारी गतिविधियों में कुछ समय के लिए विराग आया। अगस्त 1915 तक बहुत से गदर नेता कैद कर लिए गए। दूसरे भारत सरकार अधिनियम (मांटेग्यू चैम्सफोर्ड एक्ट 1919) 1919 ई0 द्वारा भारत में द्वैध शासन का प्रावधान किया गया और अनुरंजन का वातावरण बन गया था। इसके अतिरिक्त उसी समय महात्मा गाँधी ने एक राष्ट्रीय नेता के रूप में उभरकर भारतीय राजनीति में पदार्पण किया। मार्च 1919ई0 में भारत सरकार ने सिडनी रौल्ट की अध्यक्षता में 'रौल्ट एक्ट' पारित किया। रौल्ट एक्ट के तहत प्र"ाासन को किसी व्यक्ति को गिरफ्तार करने और बिना मुकद्में के कारागृह में रखने का अधिकार था। इसे भारतीय इतिहास में 'काला–कानून' की संज्ञा दी गई है। इस कानून के पारित करने से भारतीयों में रौष उत्पन्न हुआ तथा इसके विरोध के लिए जनसभाएँ आयोजित की गई। फलस्वरूप 13 अप्रैल 1919ई0 को अमृतसर में जलियावाला बाग हत्याकाण्ड हुआ। इस भीषण गोलीकाण्ड से सारा दे"ा स्तब्ध रह गया।

क्रान्तिकारी आंदोलन का दूसरा चरण

महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन के पूर्णयता असफल होने से क्रान्तिकारी गतिविधियों में पुनः उग्रता आई। बंगाल में अनु"ाीलन तथा युगान्तर समितियाँ जाग उठी। प्रमुख बात यह थी कि अब यह समझा गया कि एक अखिल भारतीय संगठन होने तथा अति उतम तालमेल होने से अधिक उतम परिणाम निकल सकते हैं। इसी प्रकार अक्टूबर 1924ई0 में समस्त क्रान्तिकारी दलों का कानपूर में एक सम्मेलन बुलाया गया जिसमें सच्चिदानंद सान्याल, जगदी"ाचन्द्र चटर्जी, रामप्रसाद बिस्मिल सहित भगतसिंह, ि"ाव वर्मा, सुखदेव, भगवतीचरण वोहरा, चन्द्र"ोखर आजाद जैसे तरूण क्रान्तिकारियों ने भाग लिया। जिसके फलस्वरूप 1928ई0 में भारत गणतंत्र समिति का गठन हुआ तथा बंगाल, बिहार, उड़ीसा, उतर प्रदे"ा, पंजाब में इसकी शाखाएँ खोली गई।

9 अगस्त 1925ई0 को उतर प्रदे"ा के क्रान्तिकारियों ने सहारनपुर, लखनऊ लाईन पर काकोरी जाने वाली गाड़ी को सफलतापूर्वक लूटा। रामप्रसाद बिस्मिल तथा रो"ानलाल प्रसन्नतापूर्वक फाँसी पर लटक गए।

पंजाब क्षेत्र के क्रान्तिकारियों ने भगतसिंह के नेतृत्व में साइमन कमी"ान के विरूद्ध प्रद"र्न करते हुए लाला लाजपत राय पर किए गए लाठी चार्ज के फलस्वरूप हुई मृत्यु का प्रति"ोध लेने के लिए लाहौर के सहायक पुलिस कप्तान सांडर्स की हत्या कर दी (17 दिसम्बर, 1928 ई0) इतना ही 8 अप्रैल 1929 ई0 को दिल्ली के केन्द्रीय विधान सभा भवन में बम फैंकने के लिए भारत गणतन्त्र सेना ने दो, तरूण क्रान्तिकारियों को भेजा जिसका उद्दे"य किसी की हत्या करना नहीं था। बल्कि वे फ्रांसीसी विप्लवकारियों के उस कथन को सत्य करना चाहते थे कि बहरों के कान खोलने के लिए धमाके जरूरी हैं। चूंकि विधानसभा में बम फैंकने के आरोप में फांसी नही दी जा सकती थी।

अतएव ब्रिटि"ा सरकार ने इस काण्ड को सांडर्स हत्याकांड अथवा लाहौर 'ाडयंत्र कांड से जोड़कर भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव को 23 मार्च 1931 को फांसी दे दो।

काकोरी और लाहौर 'ाडयन्त्र केस और जतिनदास की शहादत न नवयुवकों की गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया। पूर्वी बंगाल में चटगाँव नामक बंदरगाह पर म"ाहूर क्रान्तिकारी सूर्यसेन के नेतृत्व में वहाँ के युवक एंव युवतियों ने क्रान्तिकारी क्रियाकलापों में भाग लिया। सूर्यसन ने भारतीय गणतन्त्र सेना की ओर से एक घोषणा पर जारी किया। जिसमें चटगाँव, मैमनसिंह, बारीसाल के सरकारी शस्त्रागारों पर एक ही समय हमला करने की योजना थी। सूयसेन और उनके साथी अंबिका चक्रवती, लोकनाथ बाल, गणे"ा घोष ने इस काम के लिए स्थानीय कॉलेजो, स्कूलो के विद्यार्थियों को प्रेरित किया। इनमें कल्पना दत्त तथा प्रीतिलता बाडेदर जैसी तरूण युवतियाँ और आनंद गुप्त तथा टेगराबल जैसे नवयुवक थे। इन

क्रान्तिकारियों ने पुलिस, स"ास्त्रागार, सहायक टूकड़ो, पर कब्जा करने तथा टेलीफोन एक्सचेंज तथा तारघरों को नष्ट करने के लिए चार जत्थे भेजे।

50 युवक एंव युवतियों ने ब्रिटेन की भारतीय सेना की वर्दी पहनकर पुलिस स"ास्त्रागार पर हमला किया जो चिटगाँव आर्मरी रेड के नाम से प्रसिद्ध हुआ। किन्तु जल्दी में यह आर्मी बन्दूका की कारतूस उठाना भूल गई। फलस्वरूप जब ये बन्दूकें लेकर भागे तो पुलिस की छोटी–सी टूकड़ी ने उन्हें पहाड़ियों पर शरण लेने के लिए मजबूर कर दिया। 22 मई को जलालाबाद पहाड़ी पर अंग्रेजो की एक टूकड़ी ने 57 क्रान्तिकारियों को घेर लिया। इनमें से कुछ मारे गए तथा कुछ गुरिल्ला युद्ध नीति के कारण सुरक्षित भाग निकले किन्तु क्रान्तिकारियों ने 64 अंग्रेजी सिपाहियों को लड़ाई में मार गिराया। तत्प"चात् सूर्यसेन जो गुप्त रूप से रह रहे थे, एक साथी के द्वारा वि"वासघात के कारण पकड़ गए और उन्हे फांसी दे दी गई।

आर्मरी रेड मुकदम्मे के फलस्वरूप कई क्रान्तिकारियों को अण्डेमान में आजीवन कारावास की सजा दी गई। प्रीतिलता वाडेदर ने कैद होने से बचने के लिए आत्महत्या की ली। कल्पना दत्त को हिरासत में ले लिया गया और टेगरा बल लड़ते–लड़ते मारे गये। 'चटगाँव आर्मरी रेड़' भारतीय क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी आन्दोलन में बेमिसाल है जिसने कई तरूण युवक युवतियों को क्रान्तिकारी गतिविधियों में सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहित किया।

निश्कर्श :– प्रायः सोचा जाता है कि स्वतंत्रता संघर्ष में क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी आन्दोलन की कोई भूमिका नहीं है क्योंकि यह अपने उद्दे"यों की पूर्ति में सफलता प्राप्त नहीं कर सका। इसलिए हमें क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी आंदोलन पर टिप्पणी करने से पहले यह जानना चाहिए कि सफलता से हमारा आ"ाय क्या है? यदि समझा जाए कि आन्दोलन की समाप्ति के बाद उद्दे"य प्राप्ति हुई तो हमें खेद से कहना पड़ेगा कि सन् 1920–22, 1930–34

1942ई0 के आन्दोलनों में भी उद्दे"य की प्राप्ति नहीं हुई। जो मांगे इन आन्दोलन के अन्तगर्त रखी गई थी वे पूर्ण नहीं हुई थी। आंदोलन का उद्दे"य फौरन उद्दे"य–पूर्ति न होकर जनता में जाग्रति, चेतना, स्वतन्त्रता के प्रति कर्तव्य साम्राज्यवाद पर दबाव डालने और उसके लिए सर्वस्व न्यौछावर करने की भावना, आत्मगौरव तथा आत्महत्या की भावनाओं को जागृत करना था। ठिक इसी प्रकार भारतीय वातावरण में क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी आन्दोलन के क्रान्तिकारियों ने दे"ा के लिए सर्वस्व बलिदान करना, हँसते हँसते फाँसी के तख्ते पर झूलना, जेलों में बर्बरतापूर्ण व्यवहार और यातनाओं को सहना सिखाया है। इसके अतिरिक्त भारत की नवीन पीढ़ी में जागृति फैलान और साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष में जुट जाने के लिए तैयार करने में जो भूमिका निभाई, वह किसी से भी कम नहीं है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में इन महान, वीरों की भूमिका अविस्मरणीय है। यह हर्ष की बात है कि कुछ इतिहासकारों ने इस दि"ाा मे काफी काम किया है। विपिन चन्द्र ने क्रान्तिकारियों की भूमिका पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि ''राष्ट्रवाद उद्दे"य की वजह से ही क्रान्तिकारियों को दे"ा की जागृत करने और अपने दे"ावासियों का प्यार एंव आदर प्राप्त कर पाने के सफलता मिली। यह कोई मामूली सफलता नहीं थी, पर इस सफलता का लाभ परंपरागत कांग्रेसी नेताओं ने बटोर लिया जबकि क्रान्तिकारियों ने उन्हें बुर्जुआ और मध्यम वर्ग कह कर उनकी निन्दा की थी और यह आ"ाा की थी उनका स्थान कोई नई शक्ति लेगी''

इस प्रकार क्रान्तिकारी आद"ावादियों ने भारत में नव–चेतना तो जागृत की ही मगर वे ने समाज और समाजवाद की रचना के उद्दे"यों की तरफ उतना ध्यान नहीं दे पाये क्योंकि स्वराज्य उनका पहला लक्ष्य था। इसी प्रकार वे आज राष्ट्रवादियों के साथ स्मरण किए जाते है। ''श्री जगदम्बा प्रसाद हितैषी'' द्वारा रचित पंक्तियाँ अन्त में शहीदों के सम्मान में प्रस्तुत कर रही हूँ।

''उरूजे कामयाबी पे कभी हिंदोस्तां होगा!
रिहा सैययाद के हाथों से अपना आ"ायां होगा।।
वतन की आबरू का पास देखे कौन करता है।
सुना है आज मकतल में हमारा इम्तिहां होगा।।
कभी तो आएगा वो दिन जब अपना राज देखेंगे।
जब अपनी जमीं होगी और अपना आसमाँ होगा।।
शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर वर्ष मेले।
वतन पे मरने वालों का यही बाकी नि"ाां होगा!''

References :-

1. History of Modern India: P.P: 310, 311, 312, 314 B.L. Grover
2. Nationalism and colonialism In Modern India: P.P: 243-44, Bipan Chandra.
3. Strauggle for Freedom, P.P: 169
4. History of Modern India, P.P: 541, 42, 44, 45, R.L. Shukla
5. F.C. Isemonger and J.Stalley, An Account of the Ghadar conspiracy.
6. Freedom struggle of India P.P.126, 127, 128 Bipan Chandra 229, 230